गन्ने के प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन :-

क्रं0सं0	रोग का नाम	आपतन का समय	रोग के लक्षण
1.	लाल सड़न	जुलाई से फसल के अंत तक	बरसात के बाद गन्ने की बढ़वार रूक सी जाती है पत्तियों का रंग बदरंग होने लगता है। ऊपर की तीसरी - चौथी पत्ती किनारे से तथा ऊपर से सूखना एवं मुरझाकर सुखना शुरू कर देती है। प्रभावित गन्नों की लम्बाई में चीर कर देखने पर गूदा लाल रंग का एवं बीच में चौड़ाई में सफेद रंग के धब्बे दिखाई देते हैं तथा सिरके जैसी गंध आती है।
2.	कण्डवा	अप्रेल-मई जून तथा अक्टूबर-नवम्बर एवं फरवरी	पत्तियाँ छोटी नुकीली हो जाती हैं तथा गन्ना लम्बा एवं पतला हो जाता है। गन्ने की गोफ में से एक काला कोड़ा निकलता है जो सफेद पतली झिल्ली से ढका रहता है। इसमें असंख्य बीजाणु भरे रहते हैं।
3.	उकठा	सितम्बर - अक्टूबर से फसल के अंत तक	पत्तियाँ पीली पड़ कर मुरझा जाती हैं। बाद में सूख जाती हैं। गन्ना धीरे-धीरे अंदर से सूखने लगता है और खोखला हो जाता है।
4.	घासीय प्ररोह	जून - जुलाई से फसल के अंत तक	अगोले की पत्तियों में हरापन समाप्त हो जाता है वृद्धि रूक जाती है तथा व्यांत बढ़ जाने से पूरा थान झाड़ीनुमा हो जाता है।
5.	लीफ स्काल्ड	जून - जुलाई से फसल के अंत तक	प्रारम्भ में पत्तियों पर हल्के सफेद रंग की धारियाँ बन जाती हैं। बाद में ये चौड़ी हो जाती हैं और पत्तियों कड़ी होकर अंदर की ओर मुड़ जाती हैं। गन्ने की आँखें नीचे से अंकुरित होकर कल्ले निकल आते हैं।
6.	पोक्का बोईंग	जुलाई - सितम्बर	अगोले के ऊपर की नयी पत्तियां प्रारंभ में हल्के पीली तथा सफ़ेद पड़ तथा बाद में सड़ जाती हैं। रोग की भीषण दशा में ऊपरी पोरी पर सीढ़ीनुमा चाकू के कट के निशान दिखाई देते हैं तथा बढ़वार रूक जाती है।